26

मसीह में नया जीवन कैसे जीएं

(6:5-14)

''Santification'' या ''पवित्र किया जाना'' पर हमारा अध्ययन जारी है। पिछले पाठ में हमने देखा कि ''पवित्र किया जाना'' शब्द का मूल विचार ''अलग करना'' है। रोमियों 6 और 7 में पवित्र किया जाना का सम्बन्ध परमेश्वर के पवित्र उद्देश्यों के लिए अलग किया जाना और फिर वैसे ही *जीना* है। हमें मसीह को अपने जीवनों में अन्तर करने की अनुमति देने को तैयार रहना चाहिए।[1]

1 से 4 आयतों में पौलुस ने ज़ोर दिया कि बपतिस्मा लेने पर हम मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने में सहभागी होते हैं:

> क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का (में) बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का (में) बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का (में) बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें (आयतें 3, 4)।

इस पाठ में हम देखेंगे कि पौलुस ने बपतिस्मे और इससे जुड़े विषयों पर और क्या कहना था। हम जानेंगे कि प्रभु में नये जीवन के लिए क्या करना है।

हमें कुछ *जानना* आवश्यक है[2] (6:5-7)।

मसीह में नया जीवन जीने के लिए, हमें कुछ *जानने* की आवश्यकता है। ज्ञान के महत्व पर पूरे अध्याय 6 में ज़ोर दिया गया है:[3]

> क्या तुम नहीं *जानते,* कि हम जितनों ने मसीह यीशु का (में) बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का (में) बपतिस्मा लिया? (आयत 3)।
>
> क्योंकि हम *जानते* हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें (आयत 6)।
>
> क्योंकि यह *जानते* हैं, कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं, उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की (आयत 9)।
>
> क्या तुम नहीं *जानते,* कि जिस की आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिसका अन्त धार्मिकता है? (आयत 16)।

कई लोग यह ज़ोर देते हैं कि उन्हें ''डॉक्ट्रिन'' नहीं चाहिए। वे कहते हैं कि हमें केवल नैतिक शिक्षा की आवश्यकता है। डॉक्ट्रिन के बिना नैतिक शिक्षा बिना जड़ के पेड़ों या बिना तेल के दीयों की तरह है।[4] मसीह में नया जीवन जीने के लिए हमें कुछ बातें *जानना* आवश्यक है। अज्ञानता का परिणाम अक्षमता होता है।

हमारे पाठ का वचन आयत 5 से आरम्भ होता है। पौलुस ने पहले कहा था कि हमने ''[मसीह की] मृत्यु का (में) बपतिस्मा'' लिया है? (आयत 3) और हम ''मृत्यु का (में) बपतिस्मा पाने से उसके साथ गाड़े'' जाते हैं (आयत 4)। यहां उसने कहा, ''क्योंकि यदि[5] हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे'' (आयत 5)।

यूनानी शब्द (*sumphutos*) का अनुवाद ''जुट गए'' *sun* (''के साथ'') और *phuo* (''बढ़ना'') से बना एक मिश्रित शब्द है, जिसका अर्थ ''इकट्ठे रोपे गए'' हो सकता है[6] (देखें KJV)। पौलुस ने पानी में डुबकी लगाने की तुलना भूमि में बीज रोपने से की। नये जीवन के लिए बाहर आने के लिए बीज को ''मरना'' आवश्यक है (देखें यूहन्ना 12:24)।

हमारे ''रोपने'' का महत्व है क्योंकि हम ''[मसीह] *के साथ* उसकी मृत्यु की समानता में जुट गए'' हैं। यह सच होने के कारण हम ''उसके जी उठने की समानता में भी होंगे।''[7] जब मसीह मरे हुओं में से जी उठा था, तो उसकी कुछ बातें वैसे ही थीं। उसके हाथों में अभी भी कीलों के निशान थे और उसकी पसली में भाले का घाव था (देखें यूहन्ना 20:27), परन्तु कुछ बातें फर्क थीं। वह एक नये जीवन के लिए जी उठा था, जो अब मृत्यु के वश में नहीं था (रोमियों 6:9)। इसी प्रकार जब हम बपतिस्मे की कब्र में से जी उठते हैं, तो कुछ बातें वैसी रहती हैं। उदाहरण के लिए हम वही पहले वाले लोग हैं। परन्तु कुछ बातें बदल जाती हैं क्योंकि अब हमें प्रभु में नया जीवन मिला है!

पौलुस ने इस विचार को इन शब्दों में माना: ''क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा'' (आयतें 6, 7)। इस वचन में हमें वे तीन बातें मिलती हैं,जिनका हमें पता होना आवश्यक है।

जान लें: पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया गया है

हमें यह समझना आवश्यक है ''हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया'' (आयत 6ख)। यूनानी धर्मशास्त्र में ''पुराना मनुष्यत्व'' के स्थान पर ''पुराना मनुष्य [*palaios ... anthropos*]'' है (देखें KJV)। कई टीकाकार इस पर उलझन में हैं कि [पुराना मनुष्यत्व] का क्या अर्थ है; परन्तु एक अर्थ में प्रेरित पौलुस ने आयत 8 में इस वाक्यांश को परिभाषित कर दिया। 6 और 8 आयतों के बीच समानांतरों को देखें।

''*हमारा पुराना मनुष्यत्व* उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया'' (आयत 6)।

''*हम* मसीह के साथ मर गए'' (आयत 8)।

मसीही बनने से पहले *हमारे* व्यवहार को ''हमारा पुराना मनुष्यत्व'' कहा गया है। NEB में ''जो मनुष्य हम किसी समय थे'' है। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है कि ''जो मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था ... हमारा पूरा व्यक्तित्व जो हमारे मनपरिवर्तन की पहली स्थिति था।''[8] एक व्यक्ति ने अपने जीवन की घटनाओं को ''B.C.'' (before Christ) या ''A.D.'' (after Christ) होना कहा।

''पुराना मनुष्यत्व'' मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ा दिया *गया* है यानी उसे क्रूस पर कीलों से ठोक दिया गया है अर्थात मार दिया गया है! कइयों को गले में ज़ंजीर में डाले क्रूस पहनना या मकानों पर क्रूस बनाना अच्छा लगता है। जो प्रत्युत्तर परमेश्वर चाहता है वह भवनों या बिल्डिंगों पर क्रूस बनाना नहीं, बल्कि अपने हृदय में क्रूस को लगाना है यानी पाप ''पुराने मनुष्य'' को मार डालना है![10]

इसे जानें: पाप का शरीर नाश हुआ है

हम उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए ''ताकि *पाप* का शरीर व्यर्थ हो जाए'' (आयत 6ग)। ''शरीर'' शब्द (some से) अगले कुछ अध्यायों में प्रमुख है (देखें 6:6, 12, 13; 7:5, 23, 24; 8:10, 13, 23), इसलिए हम इस शब्द की समीक्षा के लिए रुकेंगे।

शारीरिक देह, अपने आप में *न तो अच्छी और न बुरी* है यानी यह केवल इस्तेमाल किया जाने वाला औज़ार है। इसे ''प्रभाव और अभिव्यक्ति का माध्यम'' कहा गया है। शरीर की पांच इंद्रियों के द्वारा हमें अपने आस-पास के संसार का प्रभाव मिलता है। फिर शरीर के कामों के द्वारा (जैसे बोलना, हाव-भाव और चेहरे की अभिव्यक्तियों से) हम दूसरों पर व्यक्त करते हैं कि हमें कैसा लगता है और/या हम उन्हें क्या बताना चाहते हैं।

शरीर का इस्तेमाल *भलाई* के लिए हथियार के रूप में किया जा सकता है। आयत 13 में पौलुस ने अपने पाठकों को अपने शरीरों के अंग ''धर्म के हथियार होने के लिए परमेश्वर को'' सौंपने की चुनौती दी। बाद में रोमियों की पुस्तक में आगे प्रेरित ने लिखा, ''इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है'' (12:1)।

शरीर का इस्तेमाल *बुराई* के हथियार के रूप में भी किया जा सकता है। इसके अंगों का इस्तेमाल ''अधर्म के हथियार'' के रूप में हो सकता है (आयत 13)। वचन इस बात को मानता है कि शरीर (काया) कई बार परीक्षा का सामना करने में कमज़ोर होता है (देखें 7:5)। यह बार-बार शैतान के कुछ बड़े-बड़े हमलों का शिकार होता है। इसलिए रोमियों की पुस्तक में ''शरीर'' शब्द को कई बार उन वाक्यांशों से जोड़ा गया है जो बुराई के हथियार के रूप में इसके इस्तेमाल को दर्शाते हैं (देखें 7:24)। आयत 6 में यही बात है, जो ''पाप के शरीर'' यानी उस देह की बात करती है, जिसके द्वारा हम पाप करते हैं।

8:13 में पौलुस ने कहा कि परमेश्वर के आत्मा की सहायता से, हम शरीर के कामों को मार सकते हैं। परन्तु अभी के लिए उसने केवल इस बात पर ज़ोर दिया कि हमारा पुराना मनुष्यत्व मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का हमारा शरीर ''व्यर्थ हो जाए'' (आयत 6ग)।

''व्यर्थ हो जाए'' का अनुवाद *katargeo* से किया गया है, जो *kata* के साथ ''निष्क्रिय'' (*argos*) के लिए शब्द को मज़बूत करता है। *Katargeo* का अर्थ ''निष्क्रिय करना'' है।[11] NASB वाली मेरी प्रति का वैकल्पिक अनुवाद ''शक्तिहीन हो जाए'' है। कइयों का मानना है कि अपनी शारीरिक इच्छाओं पर उनका या तो बहुत कम या कोई नियन्त्रण नहीं है। पौलुस हमें यह बताना चाहता था कि मसीह के द्वारा, उन तीव्र दबावों को निष्क्रिय किया जा सकता है और उस शक्ति से वंचित किया जा सकता है, जो हम पर हावी होती है।

जान लें: पाप की दासता खत्म हो गई है

यीशु के कारण, पाप की हमारी दासता का अन्त हो चुका है। पाप का हमारा शरीर गतिहीन कर दिया गया है ''ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें'' (आयत 6घ)। अमेरिका में 1 जनवरी 1863 के दिन आज़ादी की घोषणा कर दी गई थी; फिर, 18 दिसम्बर 1865 को दासत्व को खत्म करते हुए, आधिकारिक तौर पर अमेरिकी संविधान का तेरहवां संशोधन स्वीकार किया गया। एक अर्थ में 1800 साल पहले मसीह ने अपने ही लहू के साथ हमारी *आत्मिक* स्वतन्त्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर किए।

बेशक पौलुस ने पाप के एक राजा की तरह राज करने की बात की (5:21), उसने कहा कि अब पाप के आगे घुटने टेकने का कोई कारण नहीं है। मसीही व्यक्ति को इसके आदेश मानने की आवश्यकता नहीं है, ''क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर[12] धर्मी ठहरा'' (6:7)। नये नियम के समयों में दासों को मुक्त नहीं किया जाता था। दासता से छूटने का बहुत से दावों के लिए एकमात्र ढंग *मरना* होता था। जब हम बपतिस्मा लेते हैं, तो हम पाप से मर जाते हैं (आयत 2; देखें आयतें 3, 4), जो हमें पाप से स्वतन्त्र कर देता है (आयत 7)। रब्बी लोग यह सिखाते थे कि ''मृत्यु हर ज़िम्मेदारी को रद्द कर देती है।''[13] पाप से मरने पर, पाप की सेवा करने की हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं रहती।

अमेरिका में, दासों को छोड़ देने पर, कई दास फिर भी गुलामों की तरह रहते हैं। ''या तो उन्हें विश्वास नहीं होता था कि वे छूट गए हैं या वे गुलामी में यहां तक रच बस गए होते थे कि वे छूटने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे।''[14] अफ़सोस की बात है कि कुछ लोग जो पाप की दासता से छुड़ाए जा चुके हैं आज भी दासत्व में जीवन बिताते हैं। पौलुस हर मसीही को याद दिलाना चाहता था कि अब वे पाप के दास नहीं हैं, इसलिए अब ''पाप की सेवा'' करने की कोई आवश्यकता नहीं है (6:6; KJV)।

हमें कुछ *समझने* की आवश्यकता है (6:8-11)

मसीह में नया जीवन जीने के लिए, हमें कुछ *समझने* करने की आवश्यकता है। विचार के लिए ''समझो'' शब्द आयत 11 में मिलता है: ''ऐसे ही तुम भी अपने आपको पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीही में जीवित समझो।'' 5 से 7 आयतों में ज़ोर पाप से *मरे* होने पर था। 8 से 11 आयतों में फिर से देखें कि हम पाप से मरे हैं, परन्तु ज़ोर परमेश्वर के लिए *जीवित* होने पर है।

''सो यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है, कि उसके साथ जीएंगे भी''

(आयत 8)। हम ''मसीह के साथ मर गए'' जब हमने ''उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लिया'' था (आयत 3)। ''हमारा विश्वास है कि हम उसके साथ जीएंगे भी'' क्योंकि हम ''नये जीवन की सी चाल'' चलने के लिए पानी रूपी कब्र से निकल आए (आयत 4)।

पौलुस ने आगे कहा ''यह जानते हैं, कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं'' (आयत 9क)। युगों से, कई लोग मुर्दों में से जी उठे थे; परन्तु ''फिर कभी न मरने के लिए'' केवल मसीह ही जी उठा। वह पृथ्वी से सीधे परमेश्वर के सिंहासन पर ऊपर उठाया गया (प्रेरितों 1:9; 2:33, 34)।

जिसका कारण ''उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की'' (आयत 9ख)। इस पृथ्वी पर आने के समय मसीह को ''मनुष्य की समानता में'' किया गया था (फिलिप्पियों 2:7); वह ''देहधारी हुआ'' (यूहन्ना 1:14)। इसलिए वह मृत्यु सहित देह की सभी कमज़ोरियों और सीमाओं के अधीन था। उसे ''मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु'' तक लाया गया था (फिलिप्पियों 2:8)। परन्तु मरे हुओं में से जी उठने पर ''उसे छूने की मृत्यु की शक्ति खत्म हो गई [थी]'' (रोमियों 6:9ख; फिलिप्स)।

आयत 10 में हमें यीशु की मृत्यु और उसके जी उठने के जीवन में अन्तर मिलता है। यह आयत पहले कहती है, ''क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिए एक ही बार मर गया।'' ''एक ही बार'' का अनुवाद *ephapax* से किया गया है, जो *epi* (''पर'') से मज़बूत हुए *hapax* (''एक बार'') से लिया गया है। *Ephapax* उसके लिए इस्तेमाल किया गया है, जो ''सबके लिए एक ही बार'' किया गया अर्थात जो ''बार-बार दोहराने की आवश्यकता नहीं, परन्तु एक ही बार होने से मान्य है।''[15] यह शब्द केवल इस बात पर ज़ोर दे रहा हो सकता है कि प्रभु ने दोबारा कभी नहीं मरना था। अधिक सम्भावना यही है कि इसका इस्तेमाल उसी अर्थ में किया गया है जो इब्रानियों 7:27 में है। इब्रानियों के लेखक ने ध्यान दिलाया कि पशुओं के बलिदान बार-बार देने आवश्यक थे, परन्तु यीशु का बलिदान केवल एक बार दिया जाना था। यह सबके लिए और सदा के लिए था (देखें इब्रानियों 9:24-28)।

पौलुस ने आगे कहा, ''परन्तु जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिए जीवित है'' (आयत 10ख)। ''मृत्यु'' का मूल विचार अलगाव है इसलिए हम ''जीवन'' को मेल के रूप में विचार सकते हैं यानी परमेश्वर के साथ निकट होना ही आत्मिक जीवन है (देखें यूहन्ना 17:3)। इसी लिए AB ने आयत 10 के अन्तिम भाग को इस प्रकार विस्तार दिया है, ''वह परमेश्वर के लिए जीवित है [उसके साथ न टूटने वाली संगति में]।'' यीशु मनुष्यों के लाभ के लिए मरा, परन्तु अब वह अपने पिता के साथ और उसकी महिमा के लिए जीवित है।

इसे समझें: आप मर गए हैं

यह हमें उस बात पर ले आया है, जिसमें मसीही लोगों को ''विचार'' करना आवश्यक है। यीशु के उदाहरण को ध्यान में रखते हुए पौलुस ने कहा, ''ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा, समझो'' (आयत 11क)। ''समझो'' अध्याय 4 में प्रसिद्ध अकाउंटिंग के शब्द *logizomai* से लिया गया है। पौलुस अपने पाठकों से कुछ सच्चाइयों को अपने मनों में ''चिह्नित'' करने के लिए कह रहा था। कुछ तथ्यों को *जानना* मात्र काफ़ी नहीं था; उन तथ्यों को *समझना*

अर्थात उनके पूरे प्रभावों पर सावधानीपूर्वक विचार करना आवश्यक है।

पौलुस चाहता था कि उसके पाठक दो महत्वपूर्ण सच्चाइयों पर विचार करें। पहली बात यह थी कि वे सचमुच ''पाप से मर'' गए थे। बपतिस्मा लेने के समय वे पाप से मर गए (आयतें 2-5), परन्तु हो सकता है कि उस वास्तविकता की सभी बातों को वे न समझ पाए हों।

इसे समझें: आप जीवित हैं

परन्तु उन्हें अपने आपको केवल मरे हुए ही समझना नहीं था, ''परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में *जीवित* समझो'' (आयत 11ख)। अमेरिका के पुराने पश्चिम में, ख़तरनाक गुंडों को पकड़ने के लिए पुरस्कार की पेशकश करते ''वांटड'' के पोस्टर लगाए जाते थे। कई बार पोस्टरों में ''वांटेड: डेड और अलाइव'' लिखा होता था। रोमियों की पुस्तक पर अपनी टीका में, जिम टाउनसेंट ने इस भाग का जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं नाम ''वांटेड: डेड *एण्ड* अलाइव'' रखा है।[16] परमेश्वर हमें केवल ''मरे हुए'' ही नहीं चाहता, वह हमें ''जीवित'' ही चाहता है। हमें न केवल ''पाप से मरना'' चाहिए बल्कि हमें ''परमेश्वर के लिए जीवित'' होना भी चाहिए।

पुराना मनुष्य	नया मनुष्य
पाप में जीवित परमेश्वर के लिए मरे हुए	पाप में जीवित पाप के लिए मरे हुए

इस पर विचार करें कि ''परमेश्वर के लिए जीवित'' होने का क्या अर्थ है। अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ इतना निकट होना बहुत बड़ी आशीष है! इसके साथ ही यह एक गम्भीर ज़िम्मेदारी भी देती है। ''उसके साथ न टूटने वाली संगति में'' रहना (रोमियों 6:11; AB) के लिए हमें अपनी पूरी क्षमता से उसकी इच्छा मानकर अपने आपको उसे सौंपना होगा।

हमें कुछ *पेश करना* आवश्यक है (6:12, 13)

हमारे वचन पाठ का तीसरा भाग ''इसलिए'' शब्द से आरम्भ होता है (आयत 12क)। पौलुस उस सब से जो उसने कहा था व्यावहारिक निष्कर्ष निकालने को तैयार था। *क्योंकि* उसके पाठक पाप से मर गए थे, और *क्योंकि* वे बपतिस्मे से मसीह में नये जीवन के लिए जी उठे थे, इसलिए उन्हें एक विशेष प्रकार से व्यवहार करना था।

पौलुस ने कहा, ''इसलिए पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज न करे, कि तुम उस की लालसाओं के आधीन रहो'' (आयत 12)। जेम्स आर. एडवर्ड के अनुसार यह ''रोमियों की पुस्तक में पहली नैतिक शिक्षा'' है।[17] हमने मज़बूत अर्थ देखे हैं कि विश्वासियों को भक्तिपूर्ण जीवन बिताना चाहिए (उदाहरण के लिए देखें 2:6-8, 10), परन्तु परमेश्वर द्वारा अनुयायियों से अपेक्षित ये सीधे निर्देश हैं।

रोमियों 6 के पहले भाग में पौलुस ने (''सांकेतिक मूड'' का इस्तेमाल करते हुए) बातें कही। अब उसने (''आदेशसूचक मूड'' का इस्तेमाल करते हुए) आदेश देना आरम्भ किया। उसने उत्तम पुरुष की (''हम'' और ''हमें'') बात की थी; अब उसने मध्यम पुरुष (''तुम'') की ओर रुख

किया। यहां उसका ज़ोर जानकारी देने पर नहीं, बल्कि समझाने पर था।

पहली ताड़ना है कि ''पाप तुम्हारे नश्वर शरीर में राज न करें कि तुम उसकी लालसाओं के अधीन रहो'' (आयत 12ख, ग)। पौलुस ने इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाया था कि मसीही लोग ''पाप से छूट'' गए हैं (आयत 7) और अब वह ''पाप के दासत्व में'' नहीं है (आयत 6)। इससे यह प्रभाव जा सकता है कि अब पाप का कोई खतरा नहीं है परन्तु ऐसी बात नहीं थी। जैसे छुड़ाया गया दास भी दास के रूप में सेवा करता रह सकता है वैसे भी पाप के दासत्व से छुड़ाया गया व्यक्ति भी पाप की सेवा करता रह सकता है। एक अर्थ में पौलुस ने अपने पाठकों से आग्रह किया कि ''ऐसा मत होने दो!''

या तो परमेश्वर की या पाप की सेवा के लिए अपनी देहों का इस्तेमाल करते हुए पौलुस ने कहा: ''पाप तुम्हारे नश्वर शरीर में राज न करे'' (आयत 12ख)। ''नश्वर'' शब्द *thnetos* से लिया गया है, जिसका अर्थ है ''... मृत्यु के अधीन।''[18] ''जन्म लेते ही हम मरना आरम्भ कर देते हैं।''

आगे उसने कहा, ''पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज न करे, कि *तुम उस की* [शरीर की] *लालसाओं के आधीन रहो*'' (आयत 12ख, ग)। अनुवादित शब्द ''लालसाओं'' (*epithumia* का बहुवचन रूप) का अर्थ ''वह जिस पर मन लगा हो'' (*epi* [''पर''] के साथ *thumos* [''प्राण या मन''] से)।[19] यह शब्द अच्छी हो या बुरी, किसी भी प्रकार की मज़बूत इच्छा के लिए है, परन्तु आम तौर पर यह बुरी इच्छाओं (''लालसाओं'') का ही सूचक है।[20]

परमेश्वर ने हमारे शरीरों को इच्छाएं रखने के लिए बनाया, जैसे भोजन की इच्छा। परमेश्वर ने इन इच्छाओं को हमारी अपनी भलाई और उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हमारे अन्दर रखा। परन्तु परमेश्वर के हर दान की तरह, इन इच्छाओं का दुरुपयोग करके अनुचित लाभ उठाया जा सकता है। शैतान हम से गलत ढंगों से अपनी इच्छाओं को पूरा करने का आग्रह करता है, यानी उन ढंगों से जो परमेश्वर को नापसंद हैं। याकूब ने लिखा कि ''प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है'' (याकूब 1:14)।

कइयों का मानना है कि उनकी शारीरिक लालसाएं इतनी मज़बूत हैं कि वे उन्हें रोक नहीं सकते, परन्तु पौलसु ने कहा कि ऐसा नहीं है। विश्वास और आज्ञापालन से आप पाप की दासता से छूट सकते हैं। अब परमेश्वर की सहायता से (देखें रोमियों 8:13), आप पाप को ''न'' कह सकते हैं। अब ''पाप तुम्हारे नश्वर शरीर में राज न करे।'' हम में से हर एक की अपनी कमज़ोरी होती है। कइयों में यह कमज़ोरी शराब या नशों के लिए हो सकती है। दूसरों में यह कमज़ोरी अवैध शारीरिक सम्बन्ध की हो सकती है। यह कमज़ोरी गप्पें मारने की हो सकती है। मेरी कमज़ोरी अधिक खाने की है। आपकी जो भी कमज़ोरी हो, समझ लें कि आपको उस कमज़ोरी के आगे झुकने की आवश्यकता *नहीं* है; आपको ''अपनी लालसाओं की बात'' मानने की आवश्यकता नहीं है। जब आप परीक्षा में पड़ें, तो परमेश्वर ''... निकास भी करेगा; कि तुम सह सको'' (1 कुरिन्थियों 10:13)।

***मत* सौंपो। ...**

आयत 13क में पौलुस ने यह ताड़ना जोड़ी ''और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने

के लिए पाप को सौंपो।'' ''सौंपो'' *paristemi* (*para* [''के पास'']) ''के साथ'' *histemi* ([खड़े होना]) के एक बदल, *paristano* से लिया गया है। इसका अर्थ ''पेश करना ... समर्पण करना, ... देना'' है।[21] ''आपके शरीर के अंग'' नि:संदेह आपकी शारीरिक देह के अंग हैं, जैसे आंखें, कान, मुंह, हाथ और पांव। इनमें से प्रत्येक को बुराई के लिए अर्पित किया जा सकता है।[22]

परन्तु हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम केवल अपने शरीरों से पाप करते हैं क्योंकि पापपूर्ण कार्य तो हमारे *हृदयों* से निकलते हैं (देखें लूका 6:45)। इसलिए एडवर्ड्स ने सुझाव दिया है, ''यह बात केवल शारीरिक देह तक सीमित नहीं होने चाहिए, ... क्योंकि निश्चय ही इसमें सांकेतिक अर्थ में सब मानवीय गुण और योग्यताएं सम्मिलित हैं।''[23] आयत 13 में AB का अनुवाद है ''शारीरिक अंग [और योग्यताएं]।'' CJB में ''*अपने किसी अंग को* कमज़ोरी के लिए हथियार के रूप में पाप को मत सौंपो।''

अनुवादित शब्द ''हथियार'' (*hoplon* से) का अर्थ ''औज़ार'' हो सकता है, परन्तु डब्ल्यू. ई. वाईन ने सुझाव दिया कि इस संदर्भ में ''रूपक सम्भवतया सेना है।''[24] NASB वाली मेरी प्रति में ''हथियार'' पर यह वैकल्पिक पठन है: ''या *weapons.*'' कहीं और पौलुस ने यह ज़ोर दिया है कि हमारी लड़ाई आत्मिक है (देखें इफिसियों 6:10-17)। उस लड़ाई में हम या तो प्रभु की ओर हैं या शैतान की ओर। हम बुराई के कार्य के लिए अर्पित हथियारों या भलाई के अर्पित हथियारों के रूप में अपने शरीरों और अपनी सारी (योग्यताओं) का इस्तेमाल कर सकते हैं।

सौंपो।...

बुराई करने से दूर रहना ही काफ़ी नहीं है यानी हमें भलाई करनी भी आवश्यक है। ''बगीची में से जंगली घास निकालना ही काफ़ी नहीं है; हमें फूल या सब्जियां उगाना भी आवश्यक है।'' इस लिए पौलुस ने कहा, ''पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार [औज़ार] होने के लिए परमेश्वर को सौंपो [अर्पित करो]।'' (आयत 13ख)। TEV में है, धार्मिक उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल होने के लिए *अपने आप को पूरे का पूरा उसे सौंप दो*।

विलियम बार्कले का अवलोकन है कि परमेश्वर पृथ्वी पर अपनी इच्छा पूरी करने के लिए मनुष्यों के शरीरों का इस्तेमाल करता है।[25] यदि वह कोई बात कहना चाहता है, तो उसे कहने के लिए वह मनुष्य का इस्तेमाल करता है। यदि वह किसी काम को करना चाहता है तो वह उस काम को करने के लिए लोगों का इस्तेमाल करता है। यदि वह किसी को उठाना चाहता है तो वह उसे प्रोत्साहित करने के लिए किसी व्यक्ति को लेता है। पौलुस अपने पाठकों (और हम) से वैसे विरोध होने का आग्रह कर रहा था जिन्हें पृथ्वी पर अपनी इच्छा को पूरी करने के लिए वह इस्तेमाल कर सके।

अपने पाठकों को ''मरे हुओं में जी उठा'' कहकर पौलुस एक ज़बर्दस्त प्रेरणा जोड़ रहा था। फिलिप्स के अनुवाद में निश्चित मृत्यु से बचने वाले लोगों ''की तरह'' है। यदि आप किसी निश्चित मृत्यु से बचे हैं, तो धन्यवाद व्यक्त करने के लिए आपको क्या करना चाहिए। निश्चित तौर पर *आत्मिक* मृत्यु से बचाने के लिए परमेश्वर ने जो कुछ आपके लिए किया है उसे ''जानो'' और ''समझो।'' क्या आपके लिए अपने आपको और अपने पूरे अस्तित्व को उसकी सेवा के लिए

''सौंपने [अर्पित करने]'' के लिए कहना बहुत बड़ी बात है ?

सारांश (6:14)

पौलुस ने एक वाक्य के साथ जो 1 से 13 आयतों की चर्चा को समेटता है। आयत 1 के प्रश्न का उत्तर देता है और 6:15-23 में मिलने वाली टिप्पणियों के लिए एक मोड़ का काम करता है, इस भाग को समाप्त किया। यह वाक्य इन शब्दों के साथ आरम्भ होता है: ''तब तुम पर पाप की प्रभुता न होगी'' (आयत 14क)। ''न होगी'' शब्दों का अर्थ यह नहीं है कि मसीही व्यक्ति के जीवन पर नियन्त्रण करना पाप के लिए *असम्भव* है। ऐसी व्याख्या वचन के ज़ोर को नष्ट कर देगी, जो परमेश्वर की संतान को पाप *न* करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए लिखा गया था।

किसी आज्ञा को जारी करने के लिए भविष्यकाल का इस्तेमाल किया जा सकता है।[26] अन्य शब्दों में आप किसी से कह सकते हैं, ''तुम ऐसा *नहीं करोगे,*'' जिसमें आपके कहने का अर्थ है कि ''तुम इसे कर *तो सकते हो,* पर यदि करोगे तो *मुसीबत में* पड़ जाओगे!'' उदाहरण के लिए परमेश्वर ने आदम को बताया, ''पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी *न खाना*'' (उत्पत्ति 2:17क)। बेशक आदम उस वृक्ष से खा सकता था और उसने खाया भी परन्तु उसे उसके परिणाम भुगतने पड़ने थे।

जब पौलुस ने कहा, ''तुम पर पाप की प्रभुता न होगी'' तो वह अपने पाठकों को यह आश्वासन दे रहा था कि पाप को उन पर राज करने की *आवश्यकता नहीं* थी क्योंकि उन्हें पाप पर विजय दी गई थी। वह उनसे पाप को अपने जीवनों पर प्रभुता *करने* की अनुमति न देने का आग्रह ही कर रहा था। जिम मैक्गुइगन ने लिखा है, '' 'तुम पर पाप की प्रभुता न होगी' केवल आश्वासन नहीं है, यह हथियार उठाने की पुकार [भी] है।''[27] CEV में ''पाप को अपने जीवनों पर शासन न करने दें'' है।

इस पाठ के अन्तिम भाग में, पौलुस ने अपने पाठकों को बताया कि पाप की उन पर प्रभुता *क्यों* नहीं होनी चाहिए: ''क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं वरन अनुग्रह के आधीन हो'' (आयत 14ख)। कइयों ने इन शब्दों को संदर्भ से बाहर निकालकर अपने जीवनों के लिए नारा बना लिया है: ''हम व्यवस्था के अधीन नहीं, बल्कि अनुग्रह के अधीन हैं!'' डग्लस जे. मू ने ध्यान दिलाया है कि जब पौलुस ने कहा कि हम ''व्यवस्था के अधीन नहीं हैं'' तो वह यह नहीं कह रहा था कि मसीही लोगों को कोई आज्ञा नहीं मिली जिसकी जिम्मेदारी उन पर है।[28] इसके बजाय ''व्यवस्था'' का इस्तेमाल वहां ''व्यवस्था के प्रबन्ध'' के अर्थ में किया है। इसी प्रकार, इस आयत में ''अनुग्रह'' का अर्थ ''अनुग्रह का प्रबन्ध'' है।

व्यवस्था के प्रबन्ध के अधीन, पाप की प्रभुता में न होना कठिन था क्योंकि उससे राहत का कोई मार्ग ही नहीं था। आर. सी बेल ने लिखा है, ''व्यवस्था अधीन और दास बना सकती है, परन्तु यह कठोर हृदयों को नरम नहीं बना सकती, हठी इच्छाओं को तोड़ नहीं सकती और धन्यवाद और प्रेम उत्पन्न नहीं कर सकती।''[29] इससे भी महत्वपूर्ण कि व्यवस्था पापी को धर्मी नहीं बना सकती। अनुग्रह वह सब कुछ कर सकता है, जो व्यवस्था नहीं कर सकी। अनुग्रह के प्रबन्ध के अधीन व्यक्ति पाप से छूट सकता है। अनुग्रह पाप की पकड़ को वैसे तोड़ सकता है, जैसे व्यवस्था कभी नहीं कर सकी। इस प्रकार हमारे पास आयत 1 में सांकेतिक आरोप का उत्तर

है कि पाप *के लिए प्रोत्साहित करने* के बजाय अनुग्रह वास्तव में पाप को *हतोत्साहित* करता है।

अन्त में इस प्रश्न पर विचार करें: आप पर किसकी प्रभुता है- पाप की या परमेश्वर की? यदि आपको मालूम नहीं है, तो किसी ऐसे व्यक्ति से पूछें जिसने आपकी जीवनशैली को ध्यान से देखा हो। आपके जीने के ढंग से संकेत मिल जाता है कि आपने अपने हृदय में किसे सिंहासन पर बिठाया है। यदि आपके जीवन में पाप की प्रभुता है, तो मैं आपसे आग्रह करूंगा कि अभी उसके आगे समर्पण कर दें जो आपको छुड़ा सकता है!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस प्रस्तुति का इस्तेमाल करते हुए, यह समझाएं कि गैर मसीही लोग परमेश्वर के सामने कैसे समर्पण कर सकते हैं (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38)। यदि सुनने वालों में भटके हुए मसीही हों तो उन्हें बताएं कि वे विद्रोह के अपने हथियार कैसे डाल सकते हैं (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9)।

टिप्पणियां

[1]फ्रिज़ रिडनयोर, संस्क., *हाऊ टू बी ए क्रिश्चियन विदाउट बीइंग रिलीजियस* (ग्लेंडेल, कैलिफोर्निया: रीगल बुक्स, जी/एल पब्लिकेशंस, 1967), 51. [2]कई लेखक रोमियों 6 पर अपने विचारों को ''जानों,'' ''समझो'' और ''सौंपो'' तीनों शब्दों के साथ केन्द्रित रखते हैं। [3]यह जोर अध्याय 7 में जारी रहता है। उस अध्याय की 1, 14 और 18 आयतें देखें। [4]डेविड एफ. बरगेस, संक., *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ सरमन इलस्ट्रेशंस* (सेंट लुईस: कन्कोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1988), 144 से लिया गया। [5]इस वाक्य में, ''यदि'' का अर्थ ''क्योंकि'' है। [6]*दि एनलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: शमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 384, 431; डब्ल्यू ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 474, 284. [7]यहां भविष्यकाल का इस्तेमाल हुआ है, इसलिए कई लेखकों का मानना है कि पौलुस के मन में मसीह के वापस आने के समय हमारे पुनरुत्थान की बात थी; परन्तु संदर्भ हमारे बपतिस्मे के पानी से जी उठने के विचार का समर्थन करता है। शायद यह शब्दावली हमारे बपतिस्मा लेने पर जीवन के नयेपन के लिए जी उठने की निश्चितता पर ज़ोर देने के उद्देश्य से है। [8]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 176. [9]डी स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग दि न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 135. A.D. का लातीनी वाक्यांश अनो डोमोनी ''[हमारे] प्रभु के वश में'' है। [10]बर्गस, 55 से लिया गया।

[11]वाइन, 3. [12]''छूटकर'' ''धर्मी ठहरा'' के लिए यूनानी शब्द से लिया गया है। न्यायालय में ''धर्मी ठहराए गए'' व्यक्ति को (जो ''दोषी न'' निकला हो) छोड़ दिया जाता है। [13]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू दि रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 252, एन. 43. [14]ब्रूस बर्टन, डेविड वीरमन, एण्ड नेल विल्सन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 118. [15]वाइन, 445. [16]जिम टाउनसेंड, *रोमन्स: लेट जस्टिस रोल* (एलजिन, इलिनोइस: डेविड सी. कुक पब्लिशिंग कं., 1988), 44. [17]जेम्स आर. एडवर्ड्स, *रोमन्स,* न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1992), 164. [18]वाइन, 417. ''नश्वर'' शब्द में यही अर्थ हो सकता है: ''जब यह देह हर प्रकार से मर ही जानी है तो फिर इसे और इसकी लालसाओं को खिलाना पिलाना क्यों?'' [19]*दि एनलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन,* 156, 197. [20]वाइन, 384.

[21]*दि एनलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन,* 310. [22]आप उदाहरण दे सकते हैं कि शरीर के अलग-अलग अंगों का इस्तेमाल पाप करने में कैसे हो सकता है। [23]एडवर्ड्स, 165. [24]वाइन, 329. रोमियों 6:23 पर आगे ''मज़दूरी'' पर टिप्पणियां देखें। [25]विलियम ब्राकले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 87. [26]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 44. [27]जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू दि बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मोनटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 201. [28]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 200. [29]आर. सी. बेल्ल, *स्डीज़ इन रोमन्स* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 56.